करवा-चौथ

(पति पूजा पर्व)

वीरेन्द्र गुप्तः

बोध क्रम ३६ ।।ओ३म्।। प्रकाश क्रम ६

करवा-चौथ

(पति—पूजा पर्व)

लेखक

वीरेन्द्र गुप्तः

प्रकाशक

वेद संस्थान

मण्डी चौक, मुरादाबाद

निःशुल्क भेंट कर्ता

श्री जयप्रकाश जी सर्राफ

मण्डी चौक, मुरादाबाद

सृष्टयाब्द १,९७,२९,४९,१०२

मानव सृष्टि वेद काल १,९६,०८,५३,१०२

दयानन्दाब्द १७८

विक्रम सम्वत २०५८ सन् २००१ ई०

द्वितीय संस्करण दो हजार

वेद संस्थान
की साहित्य सेवा

वेद संस्थान की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् २०४८ रविवार १६ मार्च १६६१ को हुई।

वेद संस्थान का लक्ष्य है—सद्साहित्य अल्पमूल्य पर अथवा निःशुल्क आपके पास तक पहुँचता रहे। हमने अब तक १ – विनयामृत सिन्धु, २ – अभिनन्दनीय व्यक्तित्व, ३ – विवेकशील बच्चे, ४ – जन्म दिवस, ५ – योग परिणति, ६ – करवा चौथ, ७ – दैनिक पंच महायज्ञ ८ – गोधन, ९ – पर्वमाला, १० – दाम्पत्य दिवस, ११– छलकपट और वास्तविकता, १२– ईश महिमा, १३– मन की अपार शक्ति १४– रत्न माला १५– नयन भास्कर नामक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इसी श्रंखला में श्री वीरेन्द्र गुप्तः द्वारा रचित करवा चौथ का द्वितीय संस्करण प्रस्तुत है। यह प्रस्तुति श्री जय प्रकाश जी सर्राफ के सहयोग से प्रकाशित की गई है। इस सहयोग और उदार भाव के लिये वेद संस्थान उनका आभारी है।

हमें आशा है कि आप **वेद संस्थान** को पूर्ण सहयोग देकर नूतन साहित्य प्रकाशित करने का अवसर अवश्य प्रदान करते रहेंगें।

विजय कुमार
प्रकाशन सचिव

अम्बरीष कुमार
सचिव

वेद संस्थान
मण्डी चौक, मुरादाबाद

लेखक परिचय

नाम – श्री वीरेन्द्र गुप्तः
जन्म – ३ अगस्त, १९२७ ई०,
मुरादाबाद
सम्प्रति – व्यवसाय

सम्मान :

१– १४ सितम्बर १९८२ राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रसार समिति।
२– ३ अक्टूबर १९८२ आर्यसमाज मण्डी बाँस, मुरादाबाद।
३– १४ सितम्बर १९८८ श्री यशपाल सिंह स्मृति साहित्य शोधपीठ, मुरादाबाद।
४– ३० सितम्बर १९८८ अहिवरण सम्मान पुरालेखन केन्द्र, मुरादाबाद।
५– २ जनवरी १९९२ साहू शिवशक्ति शरण कोठीवाल स्मारक समिति, मुरादाबाद।
६– ७ जनवरी १९९९ अभिनन्दन समिति द्वारा नागरिक अभिनन्दन एवं अभिनन्दंन ग्रन्थ तथा सामूहिक अभिनन्दन पत्र।
७– ६ मार्च १९९९ अखिल भारतीय माथुर वैश्य महासभा द्वारा ग्वालियर सम्मेलन में (साहित्य) समाज शिरोमणी सम्मान।
८– ६ मई १९९९ विराट आर्य सम्मेलन पश्चिमी उत्तर प्रदेश मेरठ (आर्य शिरोमणी) सम्मान।
९– २६ जनवरी २००० माथुर वैश्य मण्डल, मुरादाबाद द्वारा (साहित्यक शताब्दी पुरुष) सम्मान।
१०– २८ फरवरी २००० (अमृत महोत्सव) के अवसर पर संस्कार भारती, मुरादाबाद द्वारा अभिनन्दन।
११– १५ सितम्बर २००० (राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सहस्त्राब्दी सम्मान) सहस्त्राब्दी विश्व हिन्दी सम्मेलन नई देहली के द्वारा। सँयुक्त राष्ट्र संघ (यूनैस्को) आदि से सम्बध।
१२– १७ सितम्बर २००० "ज्ञान मन्दिर पुस्तकालय, रामपुर" हिन्दी दिवस पर सम्मान।

उल्लेख :

१– हिन्दी साहित्य का इतिहास ले0 डा0 आलोक रस्तौगी एवं श्री शरण, देहली १९८८।
२– "आर्य समाज के प्रखरव्यक्तित्व" दिव्य पब्लिकेशन केसरगंज अजमेर १९८९।
३– "आर्य लेखक कोश" दयानन्द अध्ययन संस्थान जयपुर १९९१।
४– एशिया–पैसिफिक "हू इज हू" (खण्ड ३) देहली २०००।

प्रकाशित कृतियां :

१ – इच्छानुसार सन्तान, २ – लौकिट (उपन्यास),
३ – पुत्र प्राप्ति का साधन, ४ – पाणिग्रहण संस्कार विधि,
५ – How to beget a son, (अनुवादित) ६ – सीमीत परिवार,
७ – बोध रात्रि, ८ – धार्मिक चर्चा, ९ – कर्म चर्चा, १० – सस्ती पूजा,
११ – वेद में क्या है? १२ – गर्भावस्था की उपासना,
१३ – वेद की चार शक्तियाँ, १४ – कामनाओं की पूर्ति कैसे,
१५ – नींव के पत्थर, १६ – यज्ञों का महत्व, १७ – ज्ञान दीप,
१८ – The light of learning (अनुवादित)
१९ – दैनिक पंच महायज्ञ, २० – दिव्य दर्शन, २१ – दस नियम,
२२ – पतन क्यों होता है, २३ – विवेक कब जागता है,
२४ – ज्ञान कर्म उपासना, २५ – वेद दर्शन, २६ – वेदांग परिचय,
२७ – संस्कार, २८ – निरकार साकार के स्वरूप का दिग्दर्शन,
२९ – मनुर्भव, ३० – अदीनास्याम, ३१ – गायत्री साधन,
३२ – नव सम्वत्, ३३ – आनुषक (कहानियाँ),
३४ – विवेकशील बच्चे, ३५ – जन्म दिवस, ३६ – क़रवा चौथ,
३७ – योग परिणति, ३८ – पर्वमाला, ३९ – दाम्पत्यदिवस,
४० – छलकपट और वास्तविकता, ४१ – श्रद्धा सुमन, ४२ – माथुर वैश्यों का उंदगम, ४३ – ईश महिमा, ४४ – मन की अपार शक्ति ४५– नयन भांस्कर।

श्रीमती एवं श्री जय प्रकाश जी सर्राफ

साहित्य का प्रभाव

करवा चौथ की पुस्तक एक ऐसे परिवार में पहुँची, जहाँ महिला पति से लड़कर अपने पिता के घर पर आ गई थी। उस महिला ने हमारी करवा चौथ पुस्तक को पढ़ा विचारा और मनन कर अपने कर्त्तव्य को समझा। पति के घर स्वयं ही जाना स्वीकार किया।

घर उजड़ने से बच गया। आज वह अपने घर पर पति के साथ सुख चयन से जीवन बिता रही है।

इसी प्रकार की सैंकड़ों घटनायें हमारे सामने आई हैं, जहाँ इस पुस्तक ने पहुँच कर संजीवनी का कामकर परिवारों को स्वर्ग बना दिया।

।। ओ३म्।।

सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु।

ऋग्वेद ७। ६२। ६

हमारे लिये सन्मार्ग सुगम हों।

हमारा देश और संस्कृति कृषि एवं वणिक प्रधान है। हमारे सारे पर्व ऋतु अनुसार मनाये जाते हैं। संसार में कोई भी ऐसा देश नहीं जहाँ पर छ: ऋतुऐं होती हों। केवल भारतवर्ष में ही छ: ऋतुऐं होती हैं, इसी कारण इस भूभाग को स्वर्ग भूमि कहा जाता है। यहीं की संस्कृति प्राचीनतम संस्कृति है। इसका धर्म ग्रन्थ ऋग, यजु, साम, अर्थव, चारों वेद हैं, इसकी आयु १, ९६, ०८, ५३, १०२ वर्ष की है। इस देश के वासियों ने समस्त संसार को कला, संस्कृति, सभ्यता, वस्तु—विज्ञान आदि का समस्त ज्ञान दिया। मनु जी महाराज कहते हैं:—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मन:।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्या सर्व मानवा:।।

इस देश में उत्पन्न हुए विद्वानों से पृथ्वी के समस्त मानव अपना अपना चरित्र सीखें।

नया अन्न आने और ऋतु परिवर्तन के उपलक्ष में फाल्गुन पौर्णमासी के दिन नवान्नेष्टि यज्ञ (होलिकोत्सव) मनाया जाता है अर्थात् नये अन्न जौ की बालें और होले की प्रथम यज्ञ में आहुति देकर उस प्रभु का धन्यवाद करते हैं। इसके पश्चात् वर्षा ऋतु आती है, उसके आगमन पर आषाढ़ शुक्ल एकादशी से (देवशयनी) वर्षा का चर्तुमास प्रारम्भ हो जाता है। वर्षा ऋतु में बनों में स्थान—स्थान पर वर्षा का जल भर जाता है। कींच पानी के संकटों से बचने के लिये देवशयनी एकादशी से सभी देवगण अर्थात् सन्यासी, वानप्रस्थी,

वैरागी, साधक आदि सब अपने अपने परिवारों में पहुँचना आरम्भ कर देते थे। जो निरन्तर चार मास तक परिवारों में रहकर नित्य प्रति उपदेश साधना, ध्यान, प्राणायाम आदि का अभ्यास कराते रहते थे। इन्हीं दिनों में सारे वणिक भी अपने—अपने परिवारों में अपना व्यापार समेट कर चले आते थे। जिस समय की यह परम्परा रही है, उस समय के युगों में यातायात के साधन बैलगाड़ी, खच्चर, ऊँट, घोड़ा आदि ही थे।

आश्विन मास का कृष्ण पक्ष, श्राद्ध पक्ष कहा जाता है, जिसमें मृतकों का श्राद्ध करने की कुछ काल से परम्परा बन गयी है। वास्तव में यह श्रद्धा पक्ष है, इस समय पर वर्षा समाप्ति की ओर होती है, बनों का कींच़ पानी भी सूखने लगता है। देवशयन एकादशी को आये देवगण श्रद्धा पूर्वक उपदेश देकर वनों की ओर प्रस्थान करने लगते हैं। इस पूरे पक्ष में सर्वत्र यही चर्चा रहती है कि आज अमुक के पिताजी जा रहे हैं, किसी के दादाजी, ताऊजी आदि जा रहे हैं, सब उनसे सामूहिक रूप से उपदेश सुनते, अभिवादन करके आर्शीवाद लेते और कुछ न कुछ भेंट देकर विदा करते थे। इस प्रकार यह श्रद्धा पक्ष बड़े उत्साह से मनाया जाता था।

हमारी संस्कृति अनुशासित है, नियमवद्ध है, क्रमबद्ध है, सारे पर्व क्रमानुसार ही होते हैं, उन सबका हमारी जीवन पद्धति से घनिष्ठ सम्बन्ध है, हमारी मानसिकता का उद्घोष करते हैं और हमारी जीवन शैली पर प्रकाश डालते हैं। कार्तिक कृष्ण चतुर्थी के दिन एक पर्व, विशेष रूप से विवाहित देवियाँ ''करवा—चौथ'' के नाम से मानती हैं। वास्तव में इस पर्व का नाम ''करक—चतुर्थी'' है जिसका अपभ्रंश होकर ''करवा—चौथ'' बन गया। इस पर्व को क्यों मनाते हैं? कैसे मनाना चाहिए, इस पर हम आगे चर्चा करेगें।

कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन नवष्र्येष्टि यज्ञ अर्थात् दीपावली का महान पर्व आता है। यह पर्व भी नया अन्न (शस्य) धान आने के उपलक्ष में धान की खीलों की यज्ञ में आहुति देकर प्रभु का धन्यवाद करते हैं। इस पर्व के पश्चात् सारे व्यापारीगण भी अपने—अपने व्यापार के लिये घर से निकल पड़ते और निरन्तर आठ मास तक व्यापार में ही लगे रहते हैं। दीपावली पर्व मनाकर, गृहस्वामी अपने—अपने घर परिवार की अन्न, वस्त्र, सुरक्षा, शिक्षा आदि की पूर्ण व्यवस्था करके अपने—अपने व्यापार लक्ष्य की ओर चले जाते हैं। दीपावली से दस दिन पूर्व ''करवा—चौथ'' का पर्व आता है, इस अवसर पर देवियाँ अपने—अपने गृहस्वामी को प्रोत्साहित करतीं हैं, अच्छे—अच्छे स्वादिष्ट मिष्ठान बना कर खिलाती हैं, वाणी की मधुरता से मन मोहकर प्रभु से प्रार्थना करतीं हैं कि —''हे प्रभो! हमारे पतिदेव के ऊपर कोई विपत्ति न आये आप ही हम सब के रक्षक हो, इनका स्वास्थ्य रोग रहित बना रहे, शरीर में बल स्फूर्ति बनी रहे, इनका मन घर से बाहर रहकर व्यापार में भली प्रकार लगे और अधिक से अधिक धन का संग्रह करके सकुशल घर को वापिस आयें।''

यह ''करवा—चौथ'' का पर्व ऐसी ही प्रार्थनाओं से ओत प्रोत होता है। पत्नि, पति के स्वास्थ्य और रक्षा की कामना करती है एव पति, पत्नि के लिये सुख समृद्धि के लिये पुरुषार्थ करता है। यह पर्व पति, पत्नि के सामंजस्य, प्रेम और सद्व्यवहार के लिये प्रतिवर्ष प्रेरित करने के लिये आता है।

''करवा—चौथ'' के पर्व को समझा विद्वोत्तमा ने। विद्वोत्तमा! सुशील, सुयोग्य और विदूषि महिला थी। उसकी इच्छा थी कि मेरा विवाह मुझसे योग्य पुरुष के साथ हो। कई विद्वान पण्डित आये। शास्त्रार्थ में परास्त हो कर चले गये। सबने चिड़कर एक महामूर्ख की

खोज की। वह एक पेड़ की डाल पर बैठा, उसी डाल को काट रहा था, जिस पर वह बैठा था। इन लोगों ने कहा— यह क्या कर रहे हो? डाल के साथ तुम भी नीचे गिर पड़ोगे। उत्तर में उस महामूर्ख ने कहा—'अच्छा तुम यह चाहते हो कि डाल कटके नीचे गिरे और तुम उसे उठा कर ले भागो? नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। सबने समझाया और नीचे उतरने को कहा।

महामूर्ख नीचे उतर आया और सबने उसे विवाह करने के लिये तैयार कर लिया, कहा तुम बिल्कुल चुप रहोगे, बोलोगे नहीं। तुमको किसी के भी प्रश्न का उत्तर संकेतों से ही देना है। सब कुछ तैयार करके विद्योत्तमा के पास आये तथा मूक सांकेतिक शास्त्रार्थ के लिये प्रेरित किया।

विद्योत्तमा की सहमति हो जाने पर वे महामूर्ख को पण्डितों का चोला पहनकर लाये और शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ।

विद्योत्तमा ने एक उँगली उठाकर मूक प्रश्न किया कि "ईश्वर एक है?"

महामूर्ख ने सोचा यह मेरी एक आँख फोड़ने को कह रहे हैं मैं इसकी दोनों फोड़ दूँगा यह सोचकर उसने दो उंगलियाँ उठा दीं।

विद्योत्तमा ने समझा यह कह रहे हैं, एक ईश्वर के साथ जीव और प्रकृति भी अनादि हैं। विद्योत्तमा ने हाथ उठाकर अगला प्रश्न किया कि "ज्ञानेन्द्रयाँ पाँच हैं?"

महामूर्ख ने समझा यह मुझे मारने के लिये थप्पड़ दिखा रही है, मैं इसके घूँसा मारूँगा, यह विचार कर घूँसा दिखा दिया।

विद्योत्तमा ने समझा, यह उत्तर दे रहे हैं कि पाँचों ज्ञानेन्द्रयाँ मेरे वश में हैं—मुट्ठी में हैं।

शास्त्रार्थ समाप्त हुआ, षठता से विजय प्राप्त हुई, और

विद्योत्तमा जैसी विदूषी महिला का विवाह महाजड़ मूर्ख कालिदास के साथ सम्पन्न हो गया। विद्योत्तमा ने कालिदास के घर में प्रवेश किया। रात्री को वर्षा होने लगी, किसी जानवर के चिल्लाने की आवाज आई, जिसे सुनकर विद्योत्तमा ने अपने पति से संस्कृत भाषा में कहा—यह किसकी आवाज है?

कालिदास ने उद्र—उद्र कहा।

यह सुनकर विद्योत्तमा आश्चर्य चकित रह गई? यह तो महामूर्ख मालूम होते हैं? मेरे साथ मूक शास्त्रार्थ की ओट में छल—कपट किया गया। विद्योत्तमा को खेद अवश्य हुआ परन्तु वह निराश नहीं हुई। उसने अपने पति पूजा के कर्तव्य का पालन किया। "पूजा का वास्तविक अर्थ—रोली, चावल, फूल आदि चढ़ाना मात्र ही नहीं, पूजा का वास्तविक अर्थ है, पति की सेवा सत्कार, सत्यमार्ग—दर्शन, सुरक्षा आदि की पूरी देख—रेख करना है।" पति की सेवा सत्कार के साथ शिक्षा भी देनी आरम्भ कर दी। कालिदास में संस्कार तो पहले से ही थे तभी तो विद्योत्तमा के प्रश्न का उत्तर दिया था। परिणाम यह निकला कि विद्योत्तमा ने कालिदास को पढा कर अपने से भी अधिक योग्य बना कर संसार के सामने खड़ा कर दिया जो आज महाकवि कालिदास के नाम से जाने जाते हैं। ये है करवा—चौथ के पर्व का मूल्याँकन। मूर्ख पति से घृणा नहीं की परन्तु सेवा के साथ पढ़ा कर विद्वान बना दिया।

राजा भोज की शोभा यात्रा निकल रही है। राजा जनक न होते हुए भी 'पालक' होने के नाते सबका पिता ही होता है। एक अट्टालिका पर बैठी सुधीर की पत्नि अपने पालक पिता के दर्शनों के लिये उल्लास में स्त्रियों के बीच बैठी आगे को झुककर राजा भोज के दर्शन करने लगी। राजा भोन की भी दृष्टि उसी स्त्री से जा टकराई।

सवारी आगे बढ़ी, राजा भोज ने पीछे मुडकर देखा तो वह स्त्री उसी हाव–भाव और चाव से आगे को झुककर देख रही है।

राजा भोज उसके गृह पर भोजन के लिये पहुँचे। स्त्री एक सुन्दर थाल में भोजन लगा कर लायी और राजा के सामने रखकर चली गयी।

राजा भोज की दृष्टि स्त्री के चाल ढाल पर लगी थी। राजा ने ग्रास तोडकर शाक में डाला तो वह हाथ शाक में न जाकर भूमि पर पड़ा। स्त्री यह दृष्य देखकर सोचने लगी कि यह कैसा पिता राजा भोज है, जो मेरी ओर टकटकी लगाये देख रहा है। यह मुझे देखने में इतना आतुर क्यों है? हाथ शाक में न जाकर भूमि पर पड़ रहा है? कुछ बात अवश्य है। इतना विचार कर स्त्री अन्दर गयी और एक कच्चा आम लेकर राजा के सामने आकर उखरु बैठ दोनों हाथों को घुटनों के बीच करके जोरों से किलकिला कर क्रोध से दबाती हुई बोली–

रे रे रसाल फल मुञ्चतिकिम् रसन्नो।
नाहम परेण पुरुषेण रतिम् कदाचित्।।
न अस्मात पतिस्तु परदार रतः कदाचित।
जानति नृपति भोज परदार कन्या।।

अरे ओ रसाल (आम) के फल मैं तुझे दबाती हूँ। तू रस क्यों नहीं छोड़ता, मैंने तो कभी पर पुरुष से रति क्रिया भी नहीं की। तू रस क्यों नहीं छोड़ता और मेरे पति ने भी पर स्त्री के साथ रति क्रिया नहीं की और राजा भोज जो दूसरों की स्त्री को अपने कन्या समझता है तो फिर तू रस क्यों नहीं छोड़ता।

नृपति राजा भोज स्त्री के वचन सुनकर चौंक उठा "मैं परीक्षा लेने आया था तू उसमें उत्तीर्ण हुई।" नृपति भोज ने चरण स्पर्श के

लिये हाथ बढ़ाया और कहा—''तुम मेरे राज्य की अमूल्य निधि हो, और मेरे राज्य में पाप को कोई स्थान नहीं।''

यह है करवा चौथ के संकल्पित पर्व की पवित्रता।

२३ दिसंम्बर १९१२ के दिन देहली में हाथी पर वायसराय लार्ड हार्डिंग की सवारी निकल रही थी। एकाएक बम का विस्फोट हुआ, हाथी घायल हो गया, वायसराय बाल—बाल बच गया। युवक पकडा गया, अन्धेर कोठरी में बन्द कर दिया गया। न्यायालय का नाटक हुआ और मृत्यु दण्ड घोषित हो गया। गौना होने के पश्चात् पत्नि घर आयी तो यह हृदय विदारक समाचार सुना। बन्दी गृह में पति से मिलने गयी वहाँ के रहन—सहन और भोजन के द्रष्य को देखा। घर पर अपने रहने के लिये वैसा ही सील भरा मच्छरों—दार वातावरण बनाकर रहने लगी और भोजन में भी मिट्‌टी मिलाकर खाने लगी। सबने ऐसा करने के लिये मना किया तो उसने कह दिया कि जब मेरे पतिदेव संकट में हैं तो मैं कैसे सुखी जीवन जी सकती हूँ।

२ अक्टूबर १९१३ की प्रात: स्नानादि से स्वच्छ होकर नववधु श्रंगार कर घर के आँगन में चबूतरे पर पति के ध्यान में मग्न होकर बैठ गई। जीवन संगिनी ने जीवन के अन्तिम क्षणों में भी पूरा साथ निभाया। उधर कारावास में स्वतन्त्रता का अवधूत फाँसी पर झूल गया और इधर पत्नि ने घर में ध्यानमग्न अवस्था में ही प्राण विसर्जित कर दिये।

जिस पवित्र अग्नि ने विवाह समय दाम्पत्य सूत्र में बाँधकर एक किया था, उसी अग्नि ने अन्त में भी दोनों को एक साथ अपनी गोद में ले लिया।

यह अमर बलिदानी थे भाई परमानन्द के सहोदर भाई 'बालमुकुन्द' और उनकी जीवन संगिनी 'रामरखी'। यह है ''करवा—चौथ'' के पर्व का रहस्य।

महात्मा मुन्शीराम जी के पिता बरेली शहर में कोतवाल थे। मुन्शीराम जी की पत्नि का नाम शिवदेवी था। मुन्शीराम जी स्वयं लिखते हैं—बरेली में भोजन का नियम बना कि दिन का भोजन तो मेरे पीछे करती थीं परन्तु रात्री का भोजन दोनों ऊपर अपने कमरे में एक साथ बैठकर करते थे। एक रात आठ बजे घर लौट रहा था। गाड़ी दर्जी चौक दरवाजे पर छोड़ दी। दरवाजे पर रईस मुन्शी जीवन सहाय का मकान था। उनके बड़े पुत्र मुन्शी त्रिवेनी सहाय ने मुझे रोक लिया। गजक और जाम सामने आया, मना किया परन्तु वह नहीं माने जबरन पीनी पड़ गयी। नशे में वेश्या के कमरे पर ले गये। गाना शुरू हुआ। वेश्या ने हाथ मिलाना चाहा मैं नापाक—नापाक कहते हुए नीचे उतर आया। घर की ओर लौटा, बैठक में तकिये पर जा गिरा और बूट आगे कर दिये, जो नौकर ने उतारे। उठकर ऊपर जाना चाहा परन्तु खड़ा नहीं हो सकता था, बूढ़े भृत्य के सहारे ऊपर चढ़ा। बरामदे के पास पहुँचा ही था उल्टी होने लगी। शिवदेवी ने सिर सहलाया और कुल्ला कराया, मुँह पोंछा, अंगरखा खराब हो गया था उसे उतारा और मुझे आश्रय देकर अन्दर ले गई। पलंग पर लेटाया, चादर उढाई, पास बैठकर सर दबाने लगी। आँख बन्द हो गई और मैं गहरी नींद सो गया। लगभग एक बजे आँख खुली, वह पैर दबा रही थी। मैंने पानी मांगा, आश्रय देकर उठाने लगी, मैं उठ खड़ा हुआ। गर्म दूध में मीठा डाल कर मुँह से लगा दिया। दूध पीने पर होश आया। मैंने पास बैठकर कहा—''देवी! तुम बराबर जागती रहीं और भोजन भी नहीं किया, अब कर लो।'' उत्तर ने व्याकुल कर दिया, उत्तर था ''आपके भोजन किये बिना मैं कैसे खाती, अब भोजन करने में क्या रुचि है?'' उस समय की दशा का वर्णन लेखनी द्वारा नहीं हो सकता। मैंने अपनी गिरावट की दोनों कहानियाँ सुनाकर देवी से क्षमा प्रार्थना की परन्तु वहाँ उसकी माता का उपदेश काम कर रहा था। ''आप मेरे स्वामी हो

यह सब कुछ सुनाकर पाप क्यों चढाते हो? मुझे तो शिक्षा मिली है कि मैं आपकी नित्य सेवा करूँ।'' उस रात बिना भोजन किये दोनो सो गये और दूसरे ही दिन मेरा जीवन ही बदल गया।

कुव्यसनी पति से घृणा नहीं परन्तु अपने वात्सल्य से दिशा को ही बदल दिया। यह हैं लौहपुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज।

यह हमारी संस्कृति के जीवन दर्शन हैं। पतिव्रत धर्म—पालन के प्रत्यक्ष स्वरुप हैं। यही हमारी संस्कृति की विरासत है। इन्हीं कर्तव्यों का बोध कराती है—''करवां—चौथ'' का पर्व। यह पर्व पवित्र गृहस्थ धर्म को सुखमय बनाने के लिये हर वर्ष नये संकल्पों के साथ आता है। इस दिन पति—पत्नि दोनों बैठकर विचार करें कि हमें गृहस्थ को किस दिशा में ले जाना है। गत वर्षों में हमसे क्या—क्या भूलें हुई हैं, आपस के व्यवहारों में क्या—क्या और क्यों कटुतायें आई हैं। इन सब विषयों पर विचार करें और आगे के लिये जीवन की दशा में सुधार करें।

स्त्रियों को स्त्रियाँ और पुरुषों को पुरुष ही उपदेश दिया करें ऐसा गुरुदेव दयानन्द जी महाराज ने कहा है। इसका कारण है—नारियाँ भावुक होती हैं, वाचाल उपदेशष्टाओं के वाक्य जाल से शीघ्र ही प्रभावित होकर उपदेश पर ध्यान नहीं देतीं और उपदेश को ही नकार देती हैं, परन्तु उपदेष्टा पर केन्द्रित होकर उसकी सेवा में लिप्त हो जाती हैं। यह अवस्था पाप को जन्म दे देती है। इसी कारण गुरूदेव ने इसका निषेध किया। इसी भाव से माता सीता जी ने सती अनुसुइया से उपदेश सुना। आप भी इस पर ध्यान दें।

अपने स्वामी नगर में रहें या वन में, भले हों या बुरे, जिन स्त्रियों को वह प्रिय होते हैं उनको उत्तम लोकों की प्राप्ति होती है। पति बुरे स्वभाव वाला, मनमाना वर्ताव करने वाला तथा निर्धन ही क्यों न हो वह उत्तम स्वभाव वाली नारियों के लिये श्रेष्ठ देवता के समान है। मैं बहुत विचार करने पर भी पति से बढ़कर हितकारी बन्धु नहीं

देखती। तपस्या के अमर फल की भाँति वह इस लोक व परलोक में सुख का देने वाला है। जो मूर्ख अपनी बुद्धि तथा शिक्षण पर अभिमान करके प्रति पर शासन करती है अथवा पति का कहना न मान उसको अपने अनुसार चलने पर मजबूर करती है वह अपने इस जीवन तथा भविष्य को दुःखमय बनाती हैं। ऐसी स्त्रियों को अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं होता और वह पाप कर्मों में फँसकर पथ भ्रष्ट हो जाती हैं। संसार में उन्हें अपयश की प्राप्ति होती है। अतः पतिव्रत धर्म का पालन करो, पति को प्रधान देवता समझो और प्रत्येक समय उसका अनुसरण करती हुई उसके साथ रहो।''

अब आपके सामने महाभारत अनुशासन पर्व के अर्न्तगत दान, धर्म, पर्व अध्याय १४६ की चर्चा प्रस्तुत करते हैं।

सुस्वभावा सुवचना सुवृत्ता सुखदर्शना।
अनन्यचित्ता सुमुखी भर्तुः सा धर्मचारिणी।।३५।।
सा भवेद् धर्मपरमा सा भवेद् धर्मभागिनी।
देववत् सततं साध्वी या भर्तारं प्रपश्यति।।३६।।

जिसके स्वभाव बात—चीत और आचरण उत्तम हों, जिसको देखने से पति को सुख मिलता हो, जो अपने पति के सिवा किसी दूसरे पुरुष में मन नहीं लगाती हो और स्वामी के समक्ष सदा प्रसन्नमुखी रहती हो, वह स्त्री धर्माचरण करने वाली मानी गयी है। जो साध्वी स्त्री अपने स्वामी को सदा देवतुल्य समझती है वही धर्मपरायण और वही धर्म के फल की भागिनी होती है।

शुश्रुषां परिचारं च देव तुल्यं प्रकुर्वती।
वश्या भावेन सुमनाः सुव्रता सुखदर्शना।
अनन्यचित्ता सुमुखी भर्तुः सा धर्मचारिणी।।४१।।
परुषाण्यपि चोक्ता या दृष्टा दुष्टेन चक्षुषा
सु प्रसन्नमुखी भर्तुर्या नारी सा पतिव्रता।।४२।।

जो अपने हृदय के अनुराग के कारण स्वामी के अधीन रहती है, अपने चित्त को प्रसन्न रखती है, देवता के समान पति की सेवा और परिचर्या करती है, उत्तम व्रत (संकल्प) का आश्रय लेती है और पति के लिये सुखदायक सुन्दर वेष धारण किये रहती है, जिसका चित्त पति के सिवा और किसी की ओर नहीं जाता, पति के समक्ष प्रसन्न वदन रहने वाली वह स्त्री धर्माचारिणी मानी गयी है। जो स्वामी के कठोर वचन कहने या दोष—पूर्ण दृष्टि से देखने पर भी प्रसन्नता से मुस्कराती रहती है वही स्त्री पतिव्रता है।

दरिद्रं व्याधितं दीनमध्वना परिकर्शितम्।
पतिं पुत्रमिवोपास्ते सा नारी धर्मभागिनी।।४४।।

जो सुन्दर नारी पति के सिवा किसी ओर भी दृष्टि नहीं डालती, वह पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली है। जो नारी अपने दरिद्र, रोगी, दीन अथवा रास्ते की थकावट से खिन्न हुए पति की पुत्र के समान सेवा करती है, वह भागिनी होती है।

शुश्रूषां परिचार्यां च करोत्यविमनाः सदा।
सुप्रतीता विनीता च सा नारी धर्म भागिनी।।४६।।

जो स्त्री अपने हृदय को शुद्ध रखती, गृहकार्य करने में कुशल और पुत्रवती होती, पति से प्रेम करती, और पति को ही अपने प्राण समझती है, वही धर्मफल पाने की अधिकारी होती हैं। जो सदा प्रसन्न चित्त से पति की सेवा सुश्रुषा में लगी रहती हैं, पति के ऊपर पूर्ण विश्वास रखती और उसके साथ विनय पूर्ण वर्ताव करती हैं, वही नारी धर्म के श्रेष्ठ फल की भागिनी होती हैं।

अब आगे पति व्यवहार पर भी प्रकाश डालना आवश्यक लग रहा है:—

देवदत्तां पतिभार्या विन्दते नेच्छयात्मनः।
तां साध्वीं बिभृयान्नित्यं देवाना प्रियमाचरन्।।

मनु९। ९५

देवताओं की दी हुई भार्या को पति पाता है कुछ अपनी इच्छा से नहीं, देवतों का प्रियाचरण करता हुआ उस सती का नित्य पालन करे।

मूर्खा यत्र न पूज्यन्ते धान्यं यत्र सुसञ्चितम्।
दम्पत्यो: कलहो नास्ति तत्र श्री: स्वयमागता।।

चाणक्य नीती ३। २१

जहाँ मूर्ख नहीं पूजे जाते, जहाँ अन्न संचित रहता है, और जहाँ स्त्री—पुरुष में कलह नहीं होता, वहाँ लक्ष्मी स्वयं विद्यमान रहती है।

स्त्री (वज्र) तलवार के समान है। यदि तलवार को म्यान में सुरक्षित रखने के समान स्त्री को भी सुरक्षित रूप से उचित व्यवहार, आवश्यकताओं की पूर्ति, कर्त्तव्य और अधिकारों के साथ गृह में रखा जाय तो वह भी तलवार के समान समय—समय पर अपनी तथा परिवार की रक्षा का साधन होती है, और अपना सहारा भी होती है। यदि उसे अरक्षित रखा जाय तो रखने वाले की ही घातक हो जाती है।

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैता: पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्याभूषयितव्याश्च बहुकल्याण मीप्सुभि:।।

मनु ३। ५५

अपनी बहुत भलाई चाहें तो पिता, भाई, पति और देवर भी (वस्त्रालंकारादि) से इनका पूजन (सत्कार) करें।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्त्राऽफला: क्रिया:।।

मनु ३। ५६

क्योंकि जिस कुल में स्त्रियाँ पूजी जाती हैं, वहाँ देवता रमते हैं और जहाँ इनका पूजन सत्कार नहीं होता, वहाँ सम्पूर्ण कर्म (यज्ञादि) निरर्थक हैं।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा।।

मनु ३। ५७

जिस कुल में स्त्रियाँ दुखित हो शोक करती हैं, वह कुल शीघ्र नाश को प्राप्त हो जाता है, जहाँ ये शोक नहीं करतीं, वह कुल सर्वदा बढ़ता है।

स्त्रियाँ तु रोचमनायां सर्व तद्धोचते कुलम्।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्व मेव न रोचते।।

मनु ३।६२

स्त्री (वस्त्रभूषणादि से) शोभित हो तो सम्पूर्ण कुल की शोभा है और उसके मलीन होने से सम्पूर्ण कुल मलीन रहता है।

सन्तुष्टो भार्यांया भर्त्ता भार्या तथैव च।
यस्मित्नेव कले नित्यं कल्याणां तत्रवै ध्रवम।

मनु ३।६०

जिस कुल में नित्य स्त्री से पति और पति से स्त्री प्रसन्न रहती हैं। उस कुल में निश्चय ही कल्याण होता है।

स्त्री, पति को मन, वचन, और कर्म से कभी भी अपमानित न करे, इसी प्रकार पति भी पत्नि को मन, वचन, और कर्म से अपमानित न करे।

साभार्या या शुचिर्दक्षा सा भार्या या पतिव्रता।
साभार्या या पतिंप्रीता सा भार्या सत्यवादिनी।।

चाणक्य नीति ४।१३

भार्या वही है जो पवित्र और चतुर हो, भार्या वही है जो पतिव्रता है, भार्या वही है जो पति से प्रीति रखती है, भार्या वही है जो सत्य बोलती है।

न हीद्रशमनायुष्यं लोके किञ्चन विद्यते।
याद्रशं पुरुषस्येह परदारोपसेवनम्।।

मनु ४।१३४

इस प्रकार का आयु क्षय करने वाला संसार में कोई कर्म नहीं

है जैसा (मनुष्य की आयु घटाने वाला) दूसरे की स्त्री का सेवन है।

परदारान्न गच्छेच्च मनसापि कथञ्चन।
किमु वाचास्थिबन्धोऽपि नास्ति तेषु व्यवायिनाम्।।

विष्णु पुराण ३।११।१२३

पर स्त्री से तो वाणी से क्या, मन से भी प्रसंग न करे, क्योंकि उनसे मैथुन करने वालों को अस्थि बन्धन भी नहीं होता अर्थात् उन्हें अस्थि शून्य कीटादि होना पड़ता है।

इसलिये स्त्रियाँ पतिव्रत और पुरुष पत्निव्रत धर्म का पालन करें।

एक दिन मैंने अपनी दुकान पर आये डा० प्रो० संस्कृत के विद्वान के सामने उक्त विष्णु पुराण का श्लोक रखा और कहा क्या इसमें कुछ तथ्य है?

इस पर उन्होंने उसे देखकर बन्द कर दिया और कहा—यदि ऐसा आचरण स्त्री करे तो? मैंने कहा—इसे आप अच्छा जान सकते हैं।

मैं जानता था उनके पर स्त्री गमन के कुव्यसन को। मैं उन का नाम नहीं खोलना चाहता, क्योंकि उससे उनके लिये तो कोई भला बुरा नहीं होने वाला, परन्तु हाँ! वे जिस विश्वव्यापी वेदमयी संस्था से जुड़े हैं उसको अवश्य क्षति पहुँचेगी। वह ऋषि की बात तो कहते हैं परन्तु स्वयं उस पर आचरण नहीं करते।

इस कुटैव को उनकी पत्नि भी जानती थी परन्तु उस भारतीय ललना आर्य महिला ने कोई प्रतिकार अथवा पति का अपमान नहीं किया पर वह सदा मन से दुःखी रहती। उसने पतिव्रत धर्म का पालन किया पर पति ने पत्निव्रत धर्म का पालन नहीं किया।

मौलाना सत्यदेव जी कहा करते थे ''यह आवश्यक नहीं कि विद्वान, चरित्रवान भी हो, यह तो सम्भव है कि अयोग्य व्यक्ति चरित्रवान हो सकता है परन्तु विद्वान चरित्रवान हो या न हो, इसे कुछ नहीं कहा जा सकता।'' चरित्रवान होना मानसिकता की बात है, विद्वान होना बुद्धि की बात है।

मातृवत्परदारांश्च परद्रव्याणि लोष्ठवत्।
आत्मवत्सर्व भूतानि यः पश्यति स पश्यति।।

. चाणक्य नीति १२।१३

जो दूसरों की स्त्रियों को माता के समान, दूसरे के धन को मिट्टी के समान और अपने समान सब प्राणियों को देखता है वही ठीक देखता है।

उपरोक्त सभी मर्यादाओं का पालन करते हुए, अपने पारिवारिक जीवन को सुखमय बनायें। परिवार में सर्वदा सुख शान्ति के साथ—साथ घर में घी, दूध, अन्न आदि सदैव भरपूर बना रहे, इसके लिये हम इस मन्त्र के द्वारा प्रार्थना सदा किया करें।

पावमानीर्यो अध्येत्यषिंभिः सम्भृतं रसम्।
तस्मै सरस्वती दुहे धीरं सर्पिर्मधूदकम्।।

ऋग्वेद ९।६७।३२

जो ऋषियों द्वारा सम्पादित, ज्ञानमय अन्तःकरण को पवित्र करने वाली ज्ञानमयी ऋचाओं का अध्ययन करता है, वेदवाणी और ज्ञानमय प्रभु उसको दुध, घी, मधु, जल के तुल्य ऐश्वर्य, बल आन्नद और अभ्युदय प्रदान करते हैं।

पर्व कैसे मनायें

धर्मान्धिता वश देवियाँ इस पर्व को मनाने के लिये पूरे दिन निराहार रहकर सायंकाल को चन्द्रमा की पूजा करके अन्न ग्रहण कर इतिश्री कर देतीं हैं। इस प्रकार इस पर्व की गरिमा घटती है और फल· कुछ भी प्राप्त नहीं होता। फिर इस पर्व को कैसे मनाया जाय? इसे हम बताते हैं।

शरद पूर्णिमा के पश्चात् कार्तिक कृष्ण चतुर्थी के दिन प्रातः उठकर सर्व प्रथम पतिदेव के चरण स्पर्श करके हाथ जोड़कर अभिवादन नमस्ते करनी चाहिये। वैसे तो यह कार्य नित्य प्रति करना चाहिये। ऐसा करने से मन में प्रेम, दया, करुणा और आनन्द उमड़ने

लगता है। इस कार्य को नित्य न कर सकें तो कम से कम करवा–चौथ के दिन अवश्य करें।

प्रातः काल शौचादि से निवृत होकर स्नानादि से शुद्ध होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करके समस्त परिवार जनों सहित यज्ञ वेदी पर आकर बैठें। पहले आचमन, अंग–स्पर्श, ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपसना, स्वस्ति–वाचन आदि के पश्चात् दैनिक सामान्य यज्ञ करके इन मन्त्रों से आहुति दें अथवा अर्थ सहित पाठ करें। उक्त यज्ञ प्रक्रिया दैनिक पंचमहायज्ञ विधि से देखकर करें। इन छः मन्त्रों का हम विवाह के समय पर पाठ कर चुके हैं, दोनों को इन मन्त्रों का मनन करना चाहिये कि विवाह समय पर हमने क्या–क्या संकल्प लिये थे और अब हम उन पर कितना आचरण कर रहे हैं।

१. ओं गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवः।।

ऋग्वेद १०। ८५। ३६

हे वरारने! जैसे में ऐश्वर्य सुसन्तानादि सौभाग्य की बढ़ती के लिये तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ, तू मुझ पति के साथ जरावस्था को प्राप्त हो तथा हे वीर! मैं सौभाग्य की वृद्धि के लिये आपके हस्त को ग्रहण करती हूँ आप मुझ पत्नि के साथ वृद्धावस्था पर्यन्त प्रसन्न और अनुकूल रहिये आपको मैं और मुझको आप आज से पति–पत्नि भाव करके प्राप्त हुए हैं, सकल ऐश्वर्ययुक्त न्यायकारी सब जगत् की उत्पत्ति का कर्त्ता बहुत प्रकार के जगत् का धर्ता परमात्मा और ये सब सभामण्डप में बैठे हुए विद्वान लोग गृहस्थाश्रम कर्म के अनुष्ठान के लिये तुझ को मुझे देते हैं, आज से मैं आपके हस्ते और आप मेरे हाथ बिक चुके हैं, कभी एक दूसरे का अप्रियाचरण न करें।

२. ओं भगस्ते हस्तमग्रभीत् सविता हस्तमग्रभीत्।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव।।

अथर्ववेद १४। १। ५१

हे प्रिये! ऐश्वर्य युक्त मैं तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ तथा धर्मयुक्त मार्ग में प्रेरक मैं तेरे हाथ को ग्रहण कर चुका हूँ, तू धर्म से मेरी पत्नि—भार्या है और मैं धर्म से तेरा गृहपति हूँ, अपने दोनों मिल के घर के कार्यों की सिद्धि करें और जो दोनों का अप्रियाचरण व्याभिचार है उसको कभी न करें। जिससे घर के सब काम सिद्ध, उत्तम सन्तान, ऐश्वर्य और सुख की बढती सदा होती रहे।

३. ओं ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः।
मया पत्या प्रजावति शं जीव शरदः शतम्।।

अथर्ववेद १४/१/५२

हे अनघे। सब जगत् को पालन करने हारे परमात्मा ने जिस तुझको मुझे दिया है यही तू जगत् भर में मेरी पोषण करने योग्य पत्नि हो, हे तू मुझ पति के साथ सौ शरद ऋतु अर्थात्ं शतवर्ष पर्यन्त सुख पूर्वक जीवन धारण कर। वैसे ही वधु भी वर से प्रतिज्ञा करावे। हे भद्रवीर! परमेश्वर की कृपा से आप मुझे प्राप्त हुए हो मेरे लिये आपके बिना इस जगत में दूसरा पति अर्थात् स्वामी पालन करने हारा सेव्य इष्टदेव कोई नहीं है। न मैं आप से अन्य दूसरे किसी को मानूँगी, जैसे आप मेरे सिवाय दूसरी किसी स्त्री से प्रीति न करोगे वैसे मैं भी किसी दूसरे पुरुष के साथ प्रीतिभाव से न वर्त्ता करूँगी आप मेरे साथ सौ वर्ष पर्यन्त आनन्द से प्राण धारण कीजिये।

४. ओं त्वष्टा वासो व्यऽदधाच्छुभे कं बृहस्पतेः प्रशिषा कवीनाम्।
तेनेमां नारीं सविता भगश्चसूर्यामिव परिधत्तां प्रजया।।

अर्थवेद १४। १। ५३

हे शुभानने! जैसे इस परमात्मा की सृष्टि में और उसकी तथा आप्त विद्वानों की शिक्षा से दम्पति होते हैं, जैसे बिजुली सबको व्याप्त हो रही है वैसे तू मेरी प्रसन्नता के लिये सुन्दर वस्त्र और आभूषण तथा मुझ से सुरक्षा को प्राप्त हो, इस मेरी और तेरी इच्छा

को परमात्मा सिद्ध करें जैसे सकल जगत् की उत्पत्ति करने हारा परमात्मा और पुर्ण ऐश्वर्य युक्त उत्तम प्रजा से इस तुझ मुझ नर की स्त्री को आच्छादित शोभा युक्त करे, वैसे मैं इस सबसे सूर्य की किरण के समान तुझ को वस्त्र और भूषणादि से सुशोभित सदा रखूँगा तथा हे प्रिय! आपको मैं इसी प्रकार सूर्य के समान सुशोभित आनन्द अनुकूल प्रियाचरण करके ऐश्वर्य वस्त्राभूषण आदि से सदा आन्नदित रखूँगा।

५. ओं इन्द्राग्नी द्यावा पृथिवी मातरिश्वा मित्रावरुणा भगो अश्विनोभा।
बृहस्पतिर्मरुतो ब्रह्म सोम इमां नारीं प्रजया वर्धयन्तु।।

अथर्ववेद १४।१।५४

हे मेरे सम्बन्धी लोगों! जैसे बिजुली और प्रसिद्ध अग्नि, सूर्य और भूमि अन्तरिक्षस्थ वायु प्राण और उदान तथा ऐवश्र्य सद्वैद्य और सत्योपदेशक दोनों श्रेष्ठ न्यायकारी बडी प्रजा का पालन करने हारा राजा, सभ्य मनुष्य सब से बड़ा परमात्मा और चन्द्रमा तथा सोमलतादि औषधीगण सब प्रजा की वृद्धि और पालन करते हैं, वैसे इस मेरी स्त्री को प्रजा से बढ़ाया करते हैं वैसे तू भी बढ़ाया करो जैसे मैं इस स्त्री को पूजा आदि से सदा बढ़ाया करूँगा, वैसे स्त्री भी प्रतिज्ञा करे कि मैं भी इसी मेरे पति को सदा आनन्द ऐश्वर्य को बढाया करूँगी, जैसे ये दोनों मिल के प्रजा को बढाया करते हैं वैसे तू और मैं मिल के गृहाश्रम के अभ्युदय को बढाया करें।

६. ओं अहंविष्यामि मयिरूपमस्या वेददित्पश्यन्मनसा कुलायम्।
न स्तेयमभि मंनसोदमुच्ये स्वयंश्रथ्नानो वरुणस्यपाशान्।।

अथर्ववेद १४।१।५७

हे कल्याण क्रीड़े! जैसे मन से कुल की वृद्धिको देखता हुआ मैं इस तेरे रूप को प्रीति से प्राप्त और इसमे प्रेम द्वारा व्याप्त होता

हूँ वैसे यह तू मेरी वधू मुझ में प्रेम से व्याप्त हो के अनुकूल व्यवहार को प्राप्त होवे जैसे मैं मन से भी इस तुझ वधू के साथ चोरी को छोड़ देता हूँ और किसी उत्तम पदार्थ का चोरी से भोग नहीं करता हूँ, आप पुरुषार्थ से शिथिल होकर भी उत्कृष्ट व्यवहार में विघ्नरूप दुर्व्यसनी पुरुष के बन्धनों को दूर करता रहूँ वैसे ही यह वधू भी किया करे, इसी प्रकार वधू भी स्वीकार करे कि मैं भी इसी प्रकार आप से वर्त्ता करूँगी।

इस अवसर पर वेद दर्शन के दाम्पत्य सूक्त के इन छः मन्त्रों पर भी विचार करते हैं।

१. ओं इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ।।

अथर्ववेद १४। १। २२

हे वर वधु! तुम दोनों इस गृहस्थ आश्रम में रहो। कभी वियुक्त न हुआ करो। पुत्रों नातियों से खेलते हुए आनन्द प्रसन्न रहते हुए उत्तम गृह से सम्पन्न होकर अपनी पूर्ण आयु का विशेष रूप या विविध प्रकार से भोग करो।

२. ओं सुमंगली प्रतरणी गृहाणां सुशेवा पत्ये श्वशुराय शंभूः।
स्योना श्वश्रवै प्र गृहान् विशेमान्।।

अथर्ववेद १४। २। २६

उत्तम मंगलमय चिन्हों से युक्त और गृह के जनों को दुःख से पार लगाने वाली, पति की उत्तम रूप से सेवा करने हारी, श्वसुर को कल्याण और सुख देने वाली, सास को सुखी करने हारी होकर इन गृहजनों के बीच में प्रवेश कर।

३. ओं स्योना भव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः।
स्योनास्यै सर्वस्यै विशेस्योना पुष्टायैषां भव।।

अथर्ववेद १४। २। २७

हे नववधु! श्वशुरों के लिये सुख कारिणी, पति तथा अन्य गृहजनों के लिये सुखकारिणी हो, इस समस्त प्रजा के लिये सुखकारिणी हो और इन सबकी पुष्टि समृद्धि के लिये हो।

४. ओं इहे माविन्द्र सं नुद चक्रवाकेव दम्पती।
प्रजयैनौ स्वस्तकौ विश्वमायुर्व्यश्नुताम्।।
अथर्ववेद १४। २। ६४

हे परमेश्वर! इन दोनों चकवा—चकवी के समान परस्पर प्रेम से बँधे पति—पत्नि भाव से मिले हुए जोड़े को प्रेरणा कर, कि वे दोनों उत्तम घर में रहते हुए अपनी प्रजा सहित पूर्ण आयु को नाना प्रकार से भोग प्राप्त करें।

५. ओं सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या।।
अथर्ववेद ३। ३०। १

मैं प्रभु तुमको एक हृदय वाला एक चित्त वाला, परस्पर द्वेष से रहित करता हूँ। जिस प्रकार उत्पन्न हुए बछड़े के प्रति प्रेम से खिचकर गाय दौड़ी हुई आती है, इस प्रकार एक दूसरे के पास मिलने के लिये प्रेम से खिंचकर जाओ।

६. ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः।
अन्योअन्यस्मैवल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि।।
अथर्ववेद ३। ३०। ५

हे मनुष्यों! आप लोग एक—दूसरे से बड़े और श्रेष्ठ गुण सम्पन्न होकर भी समान चित्त होकर समान कार्य का साधन करते हुए एक ही प्रकार के भार उठाते हुए अथवा समान रूप से एक ही धुरा—केन्द्र में बद्ध होकर विचरण करते हुए कभी एक—दूसरे से पृथक मत हो, एक—दूसरे के प्रति मनोहर वचनों का प्रयोग करते हुए एक—दूसरे से मिलो, आओ समान रूप से एक ही स्थान पर

एकत्र हुए तुम लोगों को मैं एक ही चित्त और मन वाला बनाता हूँ।

विवाह समय पर हमने सप्तपदी की विधि में गृहस्थ को सुखमय बनाने के लिये सात योजनाओं को अपनाने का संकल्प लिया था, उसे भी पुन: स्मरण कर लेना आवश्यक है।

१. ओं इषे एकपदी भव।

यह मेरा पहला पग अन्न को सदैव संचित बनाये रखने के लिये है।

२. ओं ऊर्ज्जेद्विपदी भव।

यह मेरा दूसरा पग शारीरिक बल को सदैव बनाये रखने के लिये अर्थात् मैं सदैव निरोगी बलयुक्त और सामर्थवान् बना रहूँ।

३. ओं रायस्पोषायम त्रिपदी भव।

यह मेरा तीसरा पग धर्म, धन को सदैव बनाये रखने के लिये है।

मानव चतुष्पाद है और सारे जीव जन्तु द्विपाद हैं। मनुष्य के चार पाद, धर्म—अर्थ—काम—मोक्ष हैं, अन्य जीव जन्तुओं के दो पाद अर्थ और काम हैं। हम मनुष्यों को धर्म के साथ अर्थ अर्जित करना चाहिए, उस सात्विक अर्जित धन से अपनी सभी आवश्यकताओं को पूरा करके शेष बचे धन को परोपकार में लगाना चाहिए। परमात्मा की न्याय व्यवस्था अटल है, यदि आपने धर्म के साथ अर्जित धन में से उसको किसी पाप कर्म में लगा दिया तो आप यह न समझें कि यह तो हमारा सात्विक धन है इसके द्वारा किया गया पाप कर्म, क्षम्य रहेगा यह सोचना गलत है। उसी प्रकार पापार्जित धन में से कुछ परोपकार कर देने से पापार्जित धन के पाप से आप कभी मुक्त नहीं हो सकते अर्थात् जितना पाप कर्म है उसका दुष्फल और जितना पुण्य कर्म है उसका सुफल अवश्य ही मिलेगा।

४. ओं मायोभव्याय चतुष्पदी भव।

यह मेरा चौथा पग सदैव सुखी बने रहने के लिये है।

५. ओं प्रजाभ्यः पञ्चपदी भव।

यह मेरा पांचवाँ पग प्रजा सन्तान के लिये है।

६. ओं ऋतुभ्यः षट्पदी भवः।

यह मेरा छठा पग ऋतु अनुसार ऋतु अनुकूल वर्ताव व्यवहार करने के लिये है।

७. ओं सखा सप्तपदी भवः।

यह मेरा सातवाँ पग सखा मित्रता के लिये है। मित्रता में बहुत बड़ा त्याग होता है, मित्र! मित्र के ऊपर धन, जीवन सब कुछ अर्पण कर देता है। पाश्चात्य सभ्यता यह है कि पहले मित्र बनो बाद में विवाह बन्धन में, जो अस्थायित्व को देने वाला है। परन्तु हमारी वैदिक संस्कृति में पहले विवाह बन्धन में बंधने के पश्चात् मित्र बनो, जो स्थायित्व को प्रदान करता है।

इसके पश्चात् यज्ञ की शेष क्रिया हस्त—ताप आदि करके शान्ति पाठ के पश्चात् प्रातःकाल का कार्य पूर्ण करें। पति आदि समस्त परिवार जनों के लिये स्वादिष्ट भोजन तैयार कर सब साथ बैठकर भोजन करें। यदि निराहार रहना चाहें तो हमें कोई आपत्ति नहीं।

सायं काल के समय जब चन्द्रमा उदित होकर प्रकाश देने लगे, उस समय चन्द्रमा के प्रकाश मे पति—पत्नि दोनों बैठकर प्रार्थना करें:—

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो योनः प्रचोदयात्।

हे प्राण स्वरूप दुःखहर्ता और व्यापक आनन्द के देने हारे प्रभो! आप सर्वज्ञ और सकल जगत् के उत्पादक हैं। हम आपके उस पूजनीयतम् पापनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी

बुद्धियों को प्रकाशित करता है। पिता! आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करें।

ओं वाचं ते शुन्धामि

हे प्रभु जी! मेरी वाणी को शुद्ध करो, मेरी वाणी में कठोरता, कर्कशता और अप्रियता न हो वरन् मधुरता और कोमलता के साथ शुद्ध उच्चारण हो।

प्राण ते शुन्धामि

मेरे प्राण को शुद्ध करो, मुझे शुद्ध प्राण वायु मिलती रहे।

चक्षुस्ते शुन्धामि

मेरे नेत्रों को शुद्ध करो, मैं नेत्रों से सही देखूँ माता, बहिन, पत्नि और कन्या के सही भेद को जानूँ और देखूँ, देखे हुए को सही प्रयोग करुँ और सही कहूँ।

श्रोत्रं ते शुन्धामि

मेरे कानों को शुद्ध करो, कानों से सुने पर, सही निर्णय लूँ, दुखिया की पुकार को अनसुना न करुँ, विद्वानों के द्वारा वेद—वाणी का श्रवण करुँ।

नाभिं ते शुन्धामि

मेरे शरीर रूपी भुवन की नाभि को शुद्ध करो, मेरी जठराग्नि सही बनी रहे, पाया हुआ भोजन सुपाच्य बना रहे।

मेढं ते शुन्धामि

मेरे प्रजननांग को शुद्ध करो, कुवासनाओं से दूर रखो।

पायुं ते शुन्धामि

मेरे मल विसर्जन को शुद्ध रखो, अर्श; भगन्दर आदि कोई दोष उत्पन्न न हो।

चरित्राँस्ते शुन्धामि

यजुर्वेद ६। १४

मेरे आचरण को शुद्ध करो, मेरा जीवन चरित्रवान् बने, मेरे पग कुमार्ग और कुव्यसनों की ओर कभी न जायें।

ओं मनस्तऽआप्यायतां

मेरा मन शक्तिशाली हो।

वाक्तऽआप्यायतां

मेरी वाणी शक्ति युक्त हो।

प्राणस्तऽआप्यायतां

मेरा प्राण शक्ति सम्पन्न हो।

चक्षुस्तऽआप्यायतां

मेरे चक्षु स्वच्छ हों।

श्रोत्रं तऽआप्यायतां

मेरे कान शक्तिवान हों।

यत्ते क्रूरं यदा स्थितं तत्तऽआप्यायतां

जो क्रूर स्वभाव है वह दूर हो, और स्थिर स्वभाव बुद्धि प्राप्त हो, वह बढे और शुद्ध हो।

निष्टयायतां तत्ते शुध्यतु शमहोभ्य:

सब दिनों के लिये शान्ति, कल्याण और सुख प्राप्त हो।

औषधे त्रायस्व स्वधिते मैन हिँसी:।।

यजुर्वेद ६। १५

औषधियाँ मेरी रक्षा करें, शस्त्रधारी पुरुष मेरी रक्षा करें, भयभीत करने वाली ताड़ना न दें।

ओं अग्नेऽदब्धायोऽशीतम पाहि

हे ज्ञानवान! हे अनिष्ट जीवन! सुरक्षितजीवन वाले स्वामिन्! हे सर्वत्र विद्यमान! आप

मा दिद्यो: पाहि

मेरी कठोर दारुण दण्ड—रूप दु:ख से रक्षा करो।

प्रसित्यै पाहि

पाप—प्रवृत्ति से मेरी रक्षा करो।

दुरिष्टयै पाहि

दुष्ट जनों की संगति से बचाओ।

दुरद्यन्यै

दुष्ट पापार्जित अन्न के भोजन से रक्षा करो।

अविषंनः पितुं कृणु

हमारे अन्न को विष रहित करो।

सुषदांयोनौ स्वाहा

घर में उत्तम रूप से विराजने योग्य भूमि हो अथवा दूसरे अगले जन्मों में वेदोक्त वाक्यों की गूँज से स्थित स्थान घर प्राप्त हो।

वाडग्नये संवेशपतये स्वाहा

अग्नि के समान प्रतापी स्वामी, उत्तम रीति से बसाने वाले पृथ्वी आदि लोकों के पालक से यही प्रार्थना है।

सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा

यजुर्वेद २।२०

ऐश्वर्य को प्राप्त कराने वाली वेद वाणी से हम उत्तम ज्ञान प्राप्त करें।

प्रभु जी! आपने चन्द्रमा की गति से हम मानवों को प्रत्येक मास के उत्थान और पतन को चन्द्रमा के क्षीण होने और फिर पूर्ण होने से बार—बार शिक्षा दे रहे हो कि तुम जीवन में उत्थान और पतन के झकोलों से विचलित मत हो जाना, जिस प्रकार चन्द्रमा इन झकोलों के साथ प्रसन्नता पूर्वक खेलता हुआ किञ्चित मात्र भी विचलित नहीं होता इसी प्रकार तुम भी विचलित मत होना।

प्रभु जी! हम अल्पज्ञ हैं, मानव हैं, शीघ्र ही धैर्य को खो देने वाले हैं, हमारे जीवन को ऐसे उत्थान और पतन के झकोलों में मत रखना। हम अपने जीवन में सदैव स्थिर भाव से रहना चाहते हैं। हम

पौर्णमासी के पूर्ण चन्द्र कलाओं की तरह परिपूर्ण उत्थान की पराकाष्ठा को तो नहीं पहुँचना चाहते और ना हीं अमावस्या की घोर अंधियारी में भटकना चाहते हैं। हम चाहते हैं जो चन्द्रमा की छवि आज है, जिसकी प्रपात में हम बैठकर आपसे पुकार कर रहे हैं, यह चन्द्र छवि रूप छाया हमारे पूर्ण जीवन में इसी अनुपात के साथ सदा बनी रहे। जिस प्रकार् हम इस चतुर्थी के चन्द्रमा की शीतल, सुखदायक प्रपात में बैठकर इस अवस्था को सदैव बनाये रखने की प्रार्थना कर रहे हैं।

प्रभु जी! इसे स्वीकार करो, स्वीकार करो, हम सब का बेड़ा पार करो।

हाथ जोड़कर नत मस्तक होते हुए—

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च।।

यजुर्वेद १६। ४१

प्रभुजी! हम बारम्बार नमन करते हैं, हमारा जीवन सदैव मंगल मय बना रहे।

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्तिः।।

इसके पश्चात् सब मिलकर भोजन आदि करें।

वेदं शरणं आगच्छामि।
सत्यं शरणं आगच्छामि।
यज्ञं शरणं आगच्छामि।